शब्द-ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 नवम्बर 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

कालजयी साहित्यकार मन्नू भंडारी

हिंदी साहित्य की प्रसिद्ध लेखिका मन्नू भंडारी का 15 नवम्बर 2021 को निधन हो गया. वह 90 वर्ष की थीं। उनका जन्म मध्य प्रदेश के मंदसौर जिले के भानपुरा गांव में 3 अप्रैल, 1939 को हुआ था। 'महाभोज' और 'आपका बंटी' जैसी कालजयी रचनाओं ने उनकी पहचान बनाई थी। लेखन का संस्कार उन्हें विरासत में मिला। उनके पिता सुख सम्पतराय भी जाने माने लेखक थे। उनकी पहचान पुरुषवादी समाज पर चोट करने वाली लेखिका के तौर पर होती थी। मन्नू भंडारी ने एक से बढ़कर एक बेहतरीन कहानियां और उपन्यास लिखे। उनकी लिखी किताबों पर फिल्में भी बनी हैं। उनकी कहानी 'यही सच है' पर 1974 में 'रजनीगंधा' फिल्म बनाई गई। बासु चैटर्जी ने इस फिल्म को बनाया था। उनकी प्रसिद्ध कृतियों में से एक है 'आपका बंटी'। भंडारी के पति सुप्रसिद्ध साहित्यकार राजेंद्र यादव थे। उनके माता-पिता ने उन्हें महेंद्र कुमारी नाम दिया था, लेकिन लेखन क्षेत्र में अपने कदम बढ़ाने के बाद उन्होंने अपना नाम बदलकर मन्नू कर लिया। इसके पीछे की वजह ये थी कि उन्हें बचपन में लोग मन्नू कहकर बुलाते थे। लोग उन्हें आजीवन मन्नू भंडारी के नाम से ही बुलाते रहे।

दिल्ली यूनिवर्सिटी के मिरांडा हाउस कॉलेज में मन्नू भंडारी ने लंबे समय तक पढ़ाने का काम भी किया। हिंदी साहित्य में उनके योगदान के लिए लोग उन्हें याद करते हैं। 'मैं हार गई', 'तीन निगाहों की एक तस्वीर', 'एक प्लेट सैलाब', 'यही सच है', 'आंखों देखा झूठ' और 'त्रिशंकु' संग्रहों को पढ़ने के बाद लोगों को उनके असल व्यक्तित्व की झलक मिलती है। मन्नू भंडारी ने हिंदी के प्रसिद्ध लेखक राजेंद्र यादव से शादी की थी। वह हंस के संपादक भी थे। हालांकि दोनों का रिश्ता एक वक्त के बाद खत्म होने के कगार पर आ गया। शादी के दशकों बाद दोनों अलग हो गए। उनके जीवन के दुख-दर्दों को समझने के लिए 'आपका बंटी' उपन्यास को पढ़ा जा सकता है। इसमें उन्होंने अपने विवाह के टूटन के बाद हुई त्रासदी का जिक्र किया है। इस उपन्यास ने उन्हें शोहरत दिलाई। मन्नू भंडारी का एक अन्य उपन्यास 'महाभोज' राजनीतिक-सामाजिक जीवन मे आई मूल्यहीनता, तिकड़मबाजी पर आधारित है। मन्नू भंडारी विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन में प्रेमचंद सृजनपीठ की अध्यक्षा भी रहीं। उनके साहित्य सृजन पर उन्हें अनेक पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए। शब्दब्रह्म की ओर से मन्नू भंडारी जी को विनम्र श्रद्धांजलि।